Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/234
Peer Reviewed & Refereed Journal, MAY-JUNE 2024, Vol- 13/83

धार्मिक पर्यटन और नैतिक विकास

डा. सन्दीप कुमार वर्मा

असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र), एस.एस. कॉलेज शाहजहॉपुर, उ. प्र.,भारत

ई.मेल sandeeplu08@gmail.com

Paper Received On: 20 May 2024

Peer Reviewed On: 24 June 2024

Published On: 01 July 2024

Abstract

धार्मिक पर्यटन जिसे आस्था पर्यटन के रूप में भी जाना जाता है, पवित्र स्थलों पर व्यक्तिगत रूप से या समूहों में यात्रा करने को संदर्भित करता है। इन स्थलों पर गैर–धार्मिक पर्यटक भी आते हैं जो सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व जानना चाहते हैं। दुनिया में हजारों की संख्या में प्रसिद्ध धार्मिक पर्यटन स्थल है जहाँ पर लोग आते–जाते रहते हैं। प्राचीन समय में विभिन्न धर्मो से सम्बंधित जानकारी यात्रा, तीर्थाटन से ही होती थी लेकिन वर्तमान समय में हम यह जानकारी बिना जाए ही प्राप्त कर सकते हैं जैसे इंटरनेट, टीवी, किताबों, समाचार–पत्रों आदि के माध्यम से लेकिन पर्यटन या धार्मिक पर्यटन का आनन्द लेने के लिए स्वयं जाना होगा तभी पर्यटन या धार्मिक पर्यटन का सपना साकार होगा। वर्तमान समय में धार्मिक पर्यटन की तरफ लोगों का झुकाव बढा है क्योंकि आज के दौर में व्यक्तियों को अपनी जीविका चलाने के लिए कडी मेहनत करनी पडती है और उन्हें सुकून नही प्राप्त होता है। जब भी नौकरी, पेशा, व्यवसाय से अवकाश प्राप्त होता है तो लोग सुकून और आनन्द प्राप्त करने के लिए पर्यटन पर निकल जाते है जिनमें धार्मिक स्थल भी शामिल होते हैं और कुछ लोग सिर्फ धार्मिक व पवित्र जगह ही जाते हैं जहाँ पर विभिन्न जाति, धर्म व वर्ग के लोगों से मुलाकात होती है उनकी सेवाएं ली जाती है जिससे समानता और बन्धुत्व की भावना का विकास होता है। धार्मिक पर्यटन के आधार पर हम देश की संस्कृति एवं भाईचारे को एक मंच पर लाने में मुख्य भूमिका अदा कर सकते हैं क्योंकि सभी धर्मो का उद्देश्य एक ही होता है– आपसी भाईचारे और सद्भाव। यह भाईचारा केवल तीर्थ एवं धार्मिक पर्यटन के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

बीज शब्दः *धार्मिक पर्यटन, नैतिक विकास, तीर्थाटन, अध्यात्म, संस्कृति।,*

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तावना

धार्मिक पर्यटन के बारे में जानने से पहले पर्यटन के बारे में संक्षेप में जान लेना आव यक है। पर्यटन का अर्थ है भ्रमण अथवा घूमना फिरना अर्थात विभिन्न प्रयोजनों के लिए किसी भिन्न स्थान की यात्रा करना। यह किसी स्थान की यात्रा करने, किसी गतिविधि के लिए जाने और यात्रा के उद्देश्य व जिस गतिविधि के लिए आप जा रहे है, उसके अनुसार आव यक कुछ समय के लिए वहाँ रहने की पूरी गतिविधि है। सरल भाब्दों में कहा जाए तो पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोंरंजन या फुरसत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्दे य से की जाती है और यह यात्रा अपने देश के अन्दर किसी स्थान पर जाने या फिर किसी दूसरे देश में यात्रा करने के रूप में भी हो सकती है। पर्यटन के कई प्रकार है जिनमें धार्मिक पर्यटन, पर्यटन का एक प्रकार है। धार्मिक पर्यटन जिसे आस्था पर्यटन के रूप में भी जाना जाता है, पवित्र स्थलों पर व्यक्तिगत रूप से या समूहों में यात्रा करने को संदर्भित करता है। इन स्थलों पर गैर–धार्मिक पर्यटक भी आते हैं जो सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व जानना चाहते हैं। दुनिया में हजारों की संख्या में प्रसिद्ध धार्मिक पर्यटन स्थल है जहाँ पर लोग आते–जाते रहते हैं। कोलमैन (2000) कहते हैं कि पर्यटन को एक अवका ा गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जाता है जबकि तीर्थयात्रा एक पवित्र आस्था की यात्रा है। पर्यटन क्षेत्र के लिए तीर्थयात्रियों को साधारण पर्यटक ही माना जाता है क्योंकि एक साधारण समर्पित व्यक्ति के रूप में भी उनकी आव यकताएं समान होते हुए भी सीमित ही रहती है। हॉर्नर और स्वारोबोक (1999) कहते हैं कि धार्मिक पर्यटन, पर्यटन के सबसे पुराने रूपों में से एक है और यह निःसन्देह ईसाई धर्म से बहुत पहले से मौजूद था। मिस्रवासियों, यूनानियों और यहूदियों ने धार्मिक यात्राओं के माध्यम से अपनी भक्ति व्यक्त की है ऐसे ही धार्मिक कारणों से ऐसी यात्राएं अफ्रीका और ए िाया में भी मौजूद थीं। राधिका कपूर (2018) ने भारत में धार्मिक पर्यटन के बारे में कहा है कि पूरे दे ा में न केवल धनी व्यक्तियों बल्कि कम आय वर्ग और समाज के आर्थिक रूप से कमजोर तबको के लोग भी धार्मिक पर्यटन का आनन्द लेते हैं।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

धार्मिक पर्यटन

धार्मिक पर्यटन अथवा आध्यात्मिक पर्यटन का साधारणतया अर्थ यह है कि वि ाष्ट धर्मो के अनुयायियों से है जो उन स्थलों पर जाते है जिन्हें वे पवित्र मानते हैं और उनके प्रति आस्था व्यक्त करते हैं। ये यात्रा के कई प्रकार हो सकते हैं लेकिन सामान्यतः इसके दो प्रकार हो सकते है एक धार्मिक उद्देश्य जिसके तहत अपने ईश्वर या आध्यात्मिक भाक्ति के प्रति सम्मान पैदा करना, इच्छाओं की पूति के बाद उनके प्रति शुक्रिया अदा करने के लिए, उनके दर्शन से अपने उद्देश्यों, आकांक्षाओं को पूरा करना और अपने को उस शक्ति से जोडना जबकि दूसरा धार्मिक स्मारकों और कलाकृतियों को देखना, वहाँ की संस्कृति के बारे में जानना। अमेरिकी समाजशास्त्री 'चार्ल्स एच लिली' ने धार्मिक पर्यटन को एक अलौकिक भाक्ति के समान बताया है जिसके द्वारा मानव सत्य के मार्ग पर चलता है एवं समाज में व्याप्त अंधवि वास को त्यागने के लिए प्रेरित होता है। साधारण भाब्दों में कहा जाए तो जब कोई व्यक्ति मुख्य रूप से अपने धार्मिक वि वास के आधार पर किसी तीर्थ स्थल की यात्रा करता है तो उसे धार्मिक पर्यटन कहा जाता है। ये यात्री पूजा करने और मोक्ष का आनन्द लेने के लिए तीर्थयात्रा करते हैं और, ऐसे ही मुस्लिम और यहूदी व अन्य धर्म के यात्री भी हैं जो तीर्थयात्रा के लिए जाते हैं क्योंकि यह उनके धर्म के लिए अनिवार्य है।

वर्तमान समय में मनुष्य मानसिक उद्वेलनों को दूर करने के लिए आध्यात्म की शाखा धर्म के द्वारा भाान्ति को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करता रहता है इसी कारण वह अनेक धार्मिक स्थलों की यात्राएं करता है, जिसे पर्यटन की भाखा धार्मिक पर्यटन का भी प्रचार एवं प्रसार होता है धार्मिक पर्यटन का मुख्य उद्देश्य पूजा–अर्चना करना है लेकिन इसके अलावा भी कई कारण हैं जिनकी वजह से यात्री पर्यटन करते हैं जैसे जब लोग जीवन में संकट का सामना करते हैं तो वे मदद के लिए ई वर की ओर रूख करते हैं और यदि वे अपनी समस्याओं और संकटों से उबर जाते हैं तो वे ई वर को धन्यवाद देने के लिए मन्दिर या धार्मिक स्थल जाते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि किसी समुदाय या समाज का भ्रष्ट व्यक्ति, अपराधी या ऐसा व्यक्ति जो समाज के लिए समस्या बना हुआ होता है या जिसने कोई अपराध किया है व अपने आप का अपराधी या पापी मानता है तो उसे अपने कार्यों पर अफसोस होता है ऐसे में वह ई वर से क्षमा मांगने या अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए किसी पवित्र धार्मिक स्थान पर जाता है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तीर्थाटन के बारे में भारतीय संस्कृति और धर्म में भी उल्लेख है। भारतीय पुराणों, धर्म–ग्रथों, वेदों एवं धर्म शास्त्रों आदि में वर्णित मनुष्य के जीवन काल को 4 आश्रम में बांटा गया है जैसे ब्रह्मचर्य आश्रम, ग्रहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम। सन्यास आश्रम में सन्यासी को बहुत सारे कर्तब्य बताए गये हैं उनमें से कुछ कर्तब्य जैसे एक जगह पर न ठहर कर उसे पवित्र धार्मिक स्थानों का भ्रमण करने, अपने ज्ञान को समाज में फैलाने आदि पर जोर दिया जाता था। कई समाजों में तीर्थ यात्रा पर जाने को व्यक्ति का उसके धर्म के अनुसार महत्वपूर्ण कर्तब्य माना जाता है और ये उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग भी होता है जैसे हिन्दू धर्म में चार धामों की यात्रा करना महत्वपूर्ण बताया गया है और ये चार धाम, दक्षिण में रामे वरम, पूर्व में जगन्नाथ–पुरी, उत्तर में बद्रीनाथ और पश्चिम में द्वारिका है। ये सबसे पवित्र स्थानों में एक है जहाँ एक हिन्दू को अपने जीवन काल में कम से कम एक बार अव य जाना चाहिए। लाखों की संख्या में हर साल इन धामों पर लोग जाते है और अपनी आस्था व्यक्त करते हैं। इसके अलावा और भी पवित्र मन्दिर है– वैष्णो देवी, केदारनाथ, और पवित्र स्थल अयोध्या, वाराणसी, मथुरा आदि हैं जहाँ पर हर साल लाखों की संख्या में श्रद्धालू जाते हैं। उत्तर प्रदे ा में अयोघ्या का भव्य और नव निर्मित राम मन्दिर वर्तमान समय में सुखियों में बना हुआ है। 22 जनवरी को इसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा किया गया जहाँ लाखों की संख्या में श्रद्धालू आते है।

धार्मिक यात्रा अथवा धार्मिक पर्यटन को मुस्लिम धर्म में भी महत्व दिया गया है। मुस्लिम धर्म में प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन काल में एक बार हज के लिए मक्का मदीना की यात्रा पर जाना अच्छा माना जाता है इसे मुस्लिम जगत में एक महत्वपूर्ण और पवित्र स्थान माना जाता है। जहाँ हर साल लाखों की संख्या में हज यात्री, हज के लिए वि व के कोने–कोने से जाते हैं और वहाँ की सरकार इसके लिए बडे स्तर पर व्यवस्था करती है। भारत में मुस्लिम धर्म के मानने वालों की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या का लगभग 14.2 प्रतिशत है। भारत में मुस्लिम धर्म के कई महत्वपूर्ण पवित्र स्थल है जहाँ हर साल हजारों की संख्या में लोग भ्रमण करते हैं ये पवित्र स्थल जैसे मस्जिद, धार्मिक स्थल और महान धार्मिक महत्व वाली दरगाहें शामिल हैं। क मीर में हजरतबल दरगाह, दिल्ली में जामा मस्जिद, राजस्थान के अजमेर में स्थित अजमेर शरीफ दरगाह, फतेहपुर सीकरी में भोख सलीम चिश्ती की दरगाह, मुम्बई में हाजी अली दरगाह आदि धार्मिक

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्थल है। इसके अलावा बहुत से क्षेत्रीय धार्मिक स्थल है जिनका महत्व उनके आस–पास के इलाकों में होता है जहाँ लोग अपनी आस्था और विश्वास को व्यक्त करने के लिए जाते है कुछ लोग मन्नतें मांगने जाते हैं और कुछ लोग मन्नतें पूरी होने के बाद शुक्रिया अदा करने जाते हैं। कुछ ऐसी पवित्र दरगाहें है जहाँ पर गैर–मुस्लिम श्रद्धालू भी जाते हैं इससे लोगों में सद्भावना और भाईचारे का विकास होता है।

धार्मिक पर्यटन की परम्परा सिख धर्म और उनके अनुयायियों के मध्य भी देखी जा सकती है। सिख धर्म के प्रवर्तक गुरू नानक थे जिन्होंने हिन्दू धर्म और मुस्लिम धर्म से अलग धर्म की शिक्षा और विचार अपनी वाणी के माध्यम से व्यक्त किए। उन्होंने अपने समय के भारतीय समाज में फैले अन्धविश्वासों, रूढियों, पाखंडों और कुप्रथाओं को दूर करने के लिए और समाज में समानता, सेवाभाव व सद्भाव स्थापित करने हेतु अपने विचार दिए। इन्होंने प्रेम, सेवा, भाई–चारे और परोपकार की दृढ नीव पर सिख धर्म की स्थापना की। उसके बाद नौ गुरू और आए जिन्होंने अपनी वाणी और विचारों के माध्यम से सिख धर्म को और मजबूत व विस्तृत किया। सिख धर्म में गुरूद्वारा को पवित्र स्थान माना जाता है जहाँ भी गुरू ग्रन्थ साहिब स्थापित हैं वो सिखों के लिए एक पवित्र स्थान है चाहे वह किसी का निजी घर का कमरा हो या गुरूद्वारा। अधिकांश गुरूद्वारे उत्तर भारत में हैं हलांकि कुछ पाकिस्तान में भी है। पास्तिान के नोरावाल जिले में बसा करतारपुर साहिब गुरूद्वारा जिसे मूल रूप से गुरूद्वारा दरबार साहिब के नाम से जाना जाता है। सिखों का यह एक प्रमुख धार्मिक स्थल है जहाँ गुरू नानक देव ने अपने जीवन के अंतिम 16 वर्ष बिताए और 22 सितम्बर 1539 को अपना देह छोडा जिसके बाद गुरूद्वारा दरबार साहिब बनवाया गया। नवम्बर 2021 में करतारपुर साहिब कॉरिडोर, जो कि पाकिस्तान में है, को खेला गया जिससे सिख तीर्थयात्री करतारपुर साहिब गुरूद्वारा का दर्शन कर सके।

जैसा कि हम जानते हैं कि स्वर्ण मन्दिर आध्यात्मिक रूप से सिख धर्म का सबसे महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है यह भारत के पंजाब के अमृतसर भाहर में स्थित एक गुरूद्वारा है। स्वर्ण मन्दिर सभी के लोगों के लिए, सभी क्षेत्रों और धर्मो के लिए पूजा का एक खुला घर है। यहाँ पर देश–विदेश में बसे सिख धर्म के लोग धार्मिक पर्यटन के रूप में आते हैं। हर साल दुनियाँ भर से 3 करोंड से 3.5 करोंड सिख और दूसरे समुदाय के श्रद्धालू यहाँ माथा टेकने पहुंचते हैं। सिख धर्म में पाँच ''तख्त'' जिसका शब्दिक अर्थ ''सिंहासन'' या ''अधिकार

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की सीट'' है और ये पाँच तख्त पाँच गुरूद्वारे हैं जिनका भारत में धार्मिक पर्यटन के रूप में सिख समुदाय के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। सिख धर्म के लोग सिर्फ भारत में नही रहते बल्कि सिख धर्म के लोग कनाडा में बडी संख्या में रहते हैं जो भारत से जाकर वहाँ बसे है इसके अलावा इंग्लैंड, अमेरिका और यूरोप के अन्य देशों में भी रहते है जहाँ गुरूद्वारे भी हैं। ये लोग भारत आते हैं और भारत के लोग इन देशों के गुरूद्वारें में भी जाया करते है जिससे एक–दूसरे की संस्कृति के बारे में जानकारी मिलती है और उनके प्रति भाईचारे की भावना पनपती है। हर धर्म से कुछ सामान्य और बहुत महत्वपूर्ण बातों की जानकारी प्राप्त होती है जिनका मानवता के विकास में बहुत योगदान होता है।

बौद्ध धर्म में धार्मिक तीर्थाटिन का अपना अलग ही महत्व है। विश्व के बहुत से देशों में बौद्ध धर्म के बहुत से पवित्र स्थल है। बौद्ध धर्म का उद्भव भारत में हुआ है लेकिन बौद्ध धर्म के मानने वाले लोगों की संख्या विदे ाों में अधिक है जैसे नेपाल, भूटान, म्यांमार, श्रीलंका, थाईलैंड, लाओस, कंबोडिया, वियतनाम, चीन, मंगोलिया, जापान, आदि देश। भारत की कुल जनसंख्या में से लगभग 0.7 प्रतिशत जनसंख्या ही बौद्ध धर्म के माने वालों की है। बौद्ध धर्म से सम्बन्धित भारत में पवित्र स्थल निम्न है–*बोधगया, सारनाथ,* और *कु ीनगर,* जो क्रमशः उनके बोधि प्राप्ति, प्रथम उपदेश तथा महापरिनिर्वाण से सम्बन्धित है। बोधगया को वर्ष 2002 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में दर्जा दिया गया। 'द टाइम्स ऑफ इण्डिया (2024)' के अनुसार 19 जनवरी, 2024 से तीन दिवसीय बोध महोत्सव का आयोजन भाुरू हुआ है जिसमें जिसमें थाईलैण्ड, लाओस, म्यांमार, श्री लंका, और सिक्किम की सांस्कृतिक मंडलिया कार्यक्रम को प्रस्तुत किया। इन बोध स्थलों के अलावा मुम्बई में *चैत्य भूमि*, नागपुर में *दीक्षाभूमि*, बिहार में *बोधगया, कु ीनगर ,सारनाथ सांची का स्तूप, पाटलिपुत्र, नालंदा जिला* उडीसा में *रत्नागिरी, संकिशा*, महाराष्ट्र में *अजंता, एलोरा* आदि है। जहाँ पर भारत के अन्दर रहने वाले बौद्ध अनुयायी आते हैं इसके अलावा अधिक मात्रा में *नेपाल, थाईलैड, कम्बोडिया, वियतनाम* और अन्य देशों के लोग भी भारत में धार्मिक यात्रा पर आते हैं और भारत के बहुत से लोग इन देशों में भी धार्मिक यात्रा करते हैं जिससे वे एक दूसरे की संस्कृति से परिचित होते हैं। विदेशों में चीन में बौद्ध तीर्थस्थल जैसे लेशान के *विशाल बुद्ध, स्प्रिंग टैम्पल बुद्ध, किजिल गुफाएं, भााओलिन गुफाएं हवा में खडा मन्दिर,* म्यानमार में बौद्ध तीर्थ स्थल *गोल्डेन रॉक, स्वेडागोन पगोडा,* नेपाल में *लुम्बिनी, मायादेवी मंदिर, कपिलवस्तु,*

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इंडोनेि ाया में बौद्ध तीर्थ स्थल *बोरोबुदूर, मेन्दुत* तथा अफगानिस्तान में *बामियान* आदि स्थल है। अफगानिस्तान में बामियान की बौद्ध प्रतिमाएं तालिबानियों के द्वारा नष्ट कर दी गई है फिर भी कहीं–कहीं बौद्ध अवशेष अभी भी मिलते हैं। इन स्थानों पर बौद्ध धर्म के मानने वाले धार्मिक तीर्थयात्रा करते है।

ईसाई धर्म के अनुयायी विश्व के सभी धर्मो के अनुयायियों से सबसे ज्यादा है। यह धर्म विश्व में सबसे अधिक माना जाने वाला धर्म है। इस धर्म के संस्थापक ईसा मसीह को माना जाता है। ईसाई धर्म के कई पवित्र स्थल है लेकिन सबसे महत्वपूर्ण पवित्र व धार्मिक तीर्थस्थल बेथलेहेम (फिलिस्तीन, इसराइल) में स्थित *''चर्च ऑफ नेटिविटी''* है जहाँ ईशा मसीह का जन्म हुआ था यह स्थान ईसाई धर्म के मानने वालों के लिए स्वर्ग के समान है। *''चर्च आफ द होली स्कल्चर''* (यरू ालम, इसराइल) वह स्थान है जहाँ पर ईसा मसीह फिर जी उठे थे और यहीं पर यी ु को दफनाया गया था। वेटिकन सिटी (रोम, इटली) कैथोलिक ईसाइयों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है यहाँ पर ईसा के 12 शिष्यों में एक की कब्र हैं। *सेन्ट थॉमस चर्च* केरल (भारत) में हैं। ईसा मसीह के 12 शिष्यों में से एक थे सेंट थामस जिन्होंने ही इस चर्च को बनवाया था। यह भारत का सबसे पुराना चर्च है जहाँ हर साल बडी संख्या में तीर्थयात्री आते है।

नवभारत टाइम्स (2024) के अनुसार कि देश में साल 2022 में 143 करोंड 30 लाख लोग धर्मस्थलों में गए जिनमें 66 लरख 40 हजार विदेशी पर्यटक थे। 22 जनवरी को अयोध्या में राम मन्दिर के उद्घाटन हुआ और उसके अगले दिन 23 जनवरी को मन्दिर में 5 लाख लोग रामलला को देखने पहुंचे। 24 जनवरी को यह आंकडा सवा तरन लरख था। वर्तमान समय में पर्यटन और धार्मिक पर्यटन तेजी से बढ रहा है और कई देशों में धार्मिक पर्यटन आय प्राप्त करने का जरिया भी बन रहा है। अब तीर्थों पर जाने वाले यात्री, अब इसे तीर्थ नही मानते, उनके लिए अब आस्था का स्थान मात्र बन गए है इसीलिए अब वह उस स्थान पर एक दो–दिन रूकने के लिए अच्छी सुविधाओं की आशा करने लगे हैं। अब व्यक्ति यह उम्मीद करने लगे हैं कि आस–पास अच्छे होटल, रेस्तरां और आवागमन के बेहतर साधन हों। उनकी इन्ही जरूरतों को देखते हुए अब कुछेक धार्मिक स्थानों पर 4 या 5 स्टार होटल्स बनने लग गए हैं। उनके ठहरने के स्थान से धार्मिक स्थल तक टैक्सियां उपलब्ध रहती हैं। राज्य सरकारें भी इस तरफ घ्यान देने लगी हैं वहाँ आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा का ध्यान

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रखने लगी हैं। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में नवनिर्मित श्रीराम मन्दिर इसी का उदाहरण है जहाँ हर दिन बडी संख्या में श्रद्धालू आते हैं ऐसे बहुत से धार्मिक पर्यटन स्थल है जहाँ पर सरकारों के द्वारा श्रद्धालुओं के लिए बहुत सी व्यवस्थाएं की जाती हैं।

नैतिक विकास

नैतिकता का अर्थ मनुष्य में नैतिक गुणों को ग्रहण करने की प्रक्रिया को नैतिक विकास कहते है। नैतिक व्यवहार हमें सीखने पडते है ये जन्मजात नही होते हैं। समाजशास्त्रीय द्रष्टिकोण से कहा जाए तो समाज के नियमों, मान्यताओं व अपेक्षाओं के अनुरूप सम्पन्न किया गया आचरण ही नैतिकता होती है। नैतिकता का विकास व्यक्ति में समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा होता है। सामान्यतः इस वि व के सभी धर्मो में नैतिक बातों का उल्लेख होता है और प्रत्येक धर्म अपने अनुयायियों से यह उम्मीद करता है कि वह नैतिकता पूर्ण व्यवहार करे जिससे उसके परिवार, समुदाय और समाज का विकास हो।

भारतीय संस्कृति में नैतिकता की अवधारणा में अनेंक गुणों को भाामिल किया है जैसे मानवीय एकता, सत्य पर वि वास, उदारता, अन्याय के प्रति संघर्ष, साहस, सच्चरित्रता, सहाुभूति, संवेदना और समन्वयवादी द्रष्टिकोण आदि। भारतीय संस्कृति पर हिन्दू धर्म का बहुत प्रभाव है और हिन्दू धर्म में नैतिक बातों का उल्लेख है। ठीक इसी प्रकार प्रत्येक देश या समाज की संस्कृति पर उस देश के धर्म का प्रभाव होता है। लोगों की दैनिक गतिविधियों पर उनके धर्म का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। हिन्दू धर्म में सभी लोगों को ईश्वर की सन्तानें माना गया है और उसके सामने सभी बराबर है कोई छोटा बडा नही है। हिन्दू धार्मिक स्थलों पर कई जातियों के लोग विभिन्न–विभिन्न प्रकार की सेवाओं देते है जब धार्मिक पर्यटन बढता है तो विभिन्न जातियों से सम्पर्क होता है जिससे व्यक्तियों के प्रति सद्भाव पैदा होता है।

सिख धर्म सहज, सरल, सादा और स्वाभाविक जीवन के मूल्यों पर जोर देता है। सिख धर्म व्यक्ति की मेहनत व दान–पुण्य पर जोर देता। ऐसा हमें प्रत्येक गुरूद्वारे में देखने को मिलता है जब हम किसी भी गुरूद्वारे में जाते है। सिख धर्म के गुरूद्वारे सभी धर्मों और जातियों के लिए खुले रहते हैं वहाँ किसी भी व्यक्ति के प्रति कोई भेदभाव नही किया जाता चाहे वह निम्न जाति का व्यक्ति क्यों न हो। धार्मिक पर्यटन के रूप में जो भी श्रद्धालू इन गुरूद्वारों में आते है वे सिख धर्म का सेवाभाव देख कर प्रफुल्लित होते और कुछ नए नैतिक

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मूल्यों को सीख कर जाते हैं। सिख गुरूओं द्वारा प्रारम्भ की गई 'लंगर' (मुफ्त भोजन) प्रथा वि वबन्धुत्व, मानवता, मानव–प्रेम, समानता एवं उदारता की अन्यत्र न पाई जाने वाली मिसाल है जो सिख धर्म के नई पीढी, और दूसरे धर्म के सामने नैतिक नियमों को अपनाने के लिए प्ररित करती है।

मुस्लिम धर्म में अल्लाह को ही श्रेष्ठ माना गया है ऐसी बहुत सी दरगाहें है जहाँ पर विभिन्न धर्म के अनुयायी आते हैं जहाँ से धर्म निरपेक्षता, समानता और सद्भाव के जैसे मूल्यों को बढावा मिलता है जो कहीं न कहीं मानवता जैसे मूल्यों के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। ईसाई धर्म में मानवतावादी मूल्यों पर जोर दिया जाता है और पूरे विश्व में ईसाई मि ानरियों के द्वारा मानवता वादी मूल्यों, समानता, भाईचारे जैसे गुणों का विस्तार किया गया है। ईसाई गिरजाघरों में ऐसा वातावरण पाया जाता है जहाँ पर सभी को समानता का अहसास होता है। ऐसा ही बौद्ध और अन्य धर्म के धार्मिक स्थलों पर अहसास होता है। ये सभी धार्मिक स्थल जिन्हें हम धार्मिक पर्यटन के माध्यम से देख और उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। जब ऐसे धार्मिक स्थलों पर धार्मिक पर्यटन को बढावा दिया जायेगा और लोग अधिक से अधिक धार्मिक पर्यटन करेंगे तो कहीं न कहीं व्यक्तियों के अन्दर ईश्वर के प्रति सर्व ाक्तिमान सत्ता का अहसास होगा है और उनके अन्दर धर्मनिरपेक्षता जैसे गुणों का भी विकास होगा है जिससे व्यक्ति सभी धर्मो के प्रति सद्भाव रखेंगे इसी से ही नैतिकता का विकास होगा।

दे ा में धार्मिक पर्यटन दिनोंदिन नई ऊंचाई पर पहुंच रहा हैं दे ा में अयोध्या, उज्जैन और बद्रीनाथ आदि धार्मिक पर्यटन को बढावा देने में आगे है। भारत सरकार की पहल पर पर्यटन मंत्रालय ने कुछ वर्ष पहले धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए चरण बद्ध विकास की योजना भी बनाई। धार्मिक पर्यटन में जब बच्चे, बुजुर्ग, महिलाएं और पुरूष जो भी शामिल होते हैं तो उनके मन मस्तिष्क में ई वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास, लोगों के प्रति सद्भाव, मेल–मिलाप, और बन्धुत्व की भावना का विकास होता है और उन्हें ई वर की सत्ता का एहसास होता है जो कहीं न कहीं मानव को सच्चरित्र, ईमानदार, दयावान आदि बनने को प्रेरित करता है। वर्तमान समय में धार्मिक पर्यटन में हमें अपने धार्मिक स्थल तक पहुंचने, वहाँ ठहरने, खाने–पीने आदि में कई लोगों की सहायता लेनी पडती है जिससें हमें लोगों प्रति सद्भाव, समानता, बन्धुत्व जैसे गुणों को विकास करना पडता है और

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हर धार्मिक स्थल, हर धर्म हमें ऐसी ही नैतिकता की शिक्षा देता है। धार्मिक पर्यटन हमें नैतिकता का पाठ व्यावहारिक रूप में पढाते है।

निष्कर्ष

धार्मिक पर्यटन, पर्यटन का ही एक प्रकार है जिसका इतिहास बहुत पुराना है। प्राचीन काल से ही लोग धार्मिक यात्रा करते आए हैं और यह यात्रा किसी एक देश में स्थित धार्मिक स्थल तक ही नहीं सीमित थी बल्कि विदेशों में स्थित स्वयं के धर्म से सम्बन्धित धार्मिक स्थल, या दूसरे धर्म से सम्बन्धित धार्मिक स्थलों तक भी होती थी। प्राचीन समय में बहुत से विदेशी यात्री जैसे मेगस्थनीज (302–298 ईसा पूर्व), टॉलेमी (130 ईस्वी), ह्वेन सांग (630–645), फाह्यान (405–411ईस्वी), ई–सिंग (671–695 ईस्वी तक), अल बैरूनी (1024–1030), इब्नबतूता(1333–1347 ईस्वी), मार्को पोलो (1292–1294) आदि ने भारत की यात्रा करके विदेशों में भारतीय संस्कृति व धर्म के बारे में जानकारी दी थी।

धर्म और अध्यात्म भारत की आत्मा है औार यह धर्म ही है जो भारत को उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक एकात्ता के सूत्र में बांधता है। वर्तमान समय में धार्मिक पर्यटन की तरफ लोगों का झुकाव बढा है क्योंकि आज के दौर में व्यक्तियों को अपनी जीविका चलाने के लिए कडी मेहनत करनी पडती है और उन्हें सुकून नही प्राप्त होता है। जब कभी भी नौकरी, पेशा, व्यवसाय से अवकाश प्राप्त होता है तो लोग सुकून और आनन्द प्राप्त करने के लिए पर्यटन पर निकल जाते है जिनमें धार्मिक स्थल भी शामिल होते हैं और कुछ लोग सिर्फ धार्मिक व पवित्र जगह ही जाते हैं जहाँ पर विभिन्न जाति, धर्म व वर्ग के लोगों से मुलाकात होती है उनकी सेवाएं ली जाती है जिससे समानता और बन्धुत्व की भावना का विकास होता है। धार्मिक पर्यटन के आधार पर हम देश की संस्कृति एवं भाईचारे को एक मंच पर लाने में मुख्य भूमिका अदा कर सकते हैं क्योंकि सभी धर्मो का उद्दे य एक ही होता है–आपसी भाईचारा और सद्भाव। यह भाईचारा केवल तीर्थ एवं धार्मिक पर्यटन के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सन्दर्भ सूची

भारत सरकार, अक्तूबर–दिसंबर, 2019.'अतुल्य भारत' पत्रिका (ऑनलाइन),पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली. पृ. 08–09.

सिंह, आनन्द. (2003)'प्राचीन भारतीय धर्म और दर्शन' जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली,पृ. 24–31.

मुकर्जी, रविन्द्रनाथ.(1999)'भारतीय समाजव संस्कृति' विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली.पृ. 51–67.

नव भारत टाइम्स. 24 जनवरी, (2024) आनलाइन प्रकाशन, लखनऊ

द टाइम्स आफ इण्डिया. 19 जनवरी, (2024) आनलाइन प्रकाशन, पटना

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies